कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MSK–008

स्नातकोत्तर कला उपाधि कार्यक्रम
(एम. ए. संस्कृत) (एम. एस. के.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2023

एम.एस.के.-008 : संस्कृत साहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) इस प्रश्नपत्र में तीन खण्ड हैं।*

(ii) सभी खण्ड करना अनिवार्य है।

(iii) खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

खण्ड-क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) निमीलितादक्षियगाच्च निद्रया हृदोऽपि ब्राह्येन्द्रियमौनमुद्रितात्।
अदर्शि संगोप्य कदाऽप्यवीक्षितो रहस्यमस्याः स महन्महीपतिः॥

अथवा

मुनिद्रुमः कोरकितः शितिद्युतिवनेऽमुनाऽमन्यत सिंहिकासुत।
तमिस्रपक्षत्रुटिकूटभक्षितं कलाकलापं किल वैधवं वमन्॥

(ख) इदं विश्वं पाल्यं विधिवदभियुक्तेन मनसा
प्रियाशोको जीवं कुसुममिव धर्मो ग्लापयति।
स्वयं कृत्वा त्यागं विलपनविनोदोऽप्यसुलभ
स्तदद्याप्युच्छ्वासो भवति ननु लाभो हि रूदितम्॥

अथवा

अपि जनकसुतायास्तच्च तच्चानुरूपं
स्फुटमिह शिशुयुग्मे नैपुणोन्नेयमस्ति।
ननु पुनरिव तन्मे गोचरीभूतमक्ष्णो
रभिनवशतपन्त्रश्रीमदास्यं प्रियायाः॥

(ग) सदाहंसाकुलं विभ्रन्मानसं प्रचलज्जलम्।
भूभृन्नाथोऽपि नो याति यस्य साम्यं हिमाचलः॥

अथवा

जननीतिमुदितमनसा सततं सुस्वामिना कृतानन्दा।
सा नगरी नगतनया गौरीव मनोहरा भाति॥

खण्ड-ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 4×10=40

(क) 'नैषधे पदलालित्यम्' की व्याख्या कीजिए।

अथवा

श्रीहर्ष की दार्शनिकता पर प्रकाश डालिए।

(ख) भवभूति की भाषाशैली पर लेख लिखिए।

अथवा

'उत्तररामचरितम्' के आधार पर 'राम' के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए।

(ग) कादम्बरी (महाश्वेता वृत्तान्त) का कथासार लिखिए।

अथवा

बाणभट्ट की कृतियों पर प्रकाश डालते हुए उनकी रचनाधर्मिता की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

(घ) संस्कृत साहित्य में 'नलचम्पू' की परिभाषा, लक्षण को बताते हुए, **दो** चम्पूकाव्यों के नाम लिखिए।

अथवा

'नलचम्पू' में वर्णित राजा नल की विशेषताओं पर लेख लिखिए।

खण्ड–ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 2×15=30

(क) अथ गीतावसाने मूकीभूतवीणा प्रशान्तमधुकर रूतेव कुमुदिनी सा कन्यका समुत्थाय प्रदक्षिणीकृत्य कृतहरप्रणामा परिवृत्य स्वभाव धवलया

तप:प्रभावप्रगल्भया दृष्ट्या समाश्वासयन्तीव, पुण्यैरिव स्पृशन्ती तीर्थ जलैरिव प्रक्षालयन्ती, तपोभिरिव पावयन्ती, शुद्धिमिव कुर्वाणा, वरदानम् इवोपपादयन्ती पवित्र तामिव नयन्ती, चन्द्रापीडमावभाषे– स्वागतमतिथये, कथमिमां भूमिमनुप्राप्तो महाभाग:, तदुत्तिष्ठ, आगम्यताम्, अनुभूयतामतिथिसत्कार: इति।

(ख) तस्याश्च द्वारि शिलातले समुपविष्टो वल्कल शयन शिरोभाग विन्यस्तवीणां तत: पर्णपुटेन निर्झरादागृहीतमर्ध्यसलिलम् आदायं तां कन्यकां समुपस्थिताम् अलमतियन्त्रणया, कृतमतिप्रसादेन, भगवति! प्रसीद, विमुच्यतामयमन्यादर:, त्वदीयमालोकनमपि सर्व पापप्रशमनमघमषणमिव पवित्रीकरणायालम्, आस्यताम् इत्यत्रवीत् अनुबध्यमानश्च तया तां सर्वामतिथिसपर्या मतिदूरावनतेन शिरसा सप्रश्रयं प्रतिजग्राह।

(ग) तस्य भगवत: सुरासुरलोकसुन्दरीहृदयानन्दकरम् अशेषत्रिभुवनसुन्दरम्, अतिशयितनलकूबरं रूपमासित्। स कदाचिदेवतार्चनकमलान्युद्धर्तुमैरावत मदजलबिन्दुबद्धचन्द्रकशतखचितजलां हरहसितसित– स्रोतसं मन्दाकिनीमवततार।